शुरुआत

सेना को मिलेंगी 6 लाख से ज्यादा एके-203,

पुरानी इंसास की जगह यूपी का स्वदेशी शेर

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ। भारतीय सेना की दशकों पुरानी 5.56 मिलीमीटर इंसास राइफल की जगह अब एके-203 लेगी। अमेठी के कोरवा स्थित संयंत्र में तैयार 'शेर' नाम की पहली एके-203 में विदेशी पुर्जा या कच्चा माल इस्तेमाल नहीं हुआ है।

भारत-रूस के सहयोग से शुरू हुई यह परियोजना अब पूरी तरह भारतीय उद्योग पर निर्भर हो गई है। राइफल का डिजाइन रूसी मूल का है, लेकिन इसका उत्पादन पूरी तरह देश में हो रहा है। सेना को ऐसी 6,01,427 राइफलों की आपूर्ति की जानी है। पूरी तरह स्वदेशी संस्करण का परीक्षण सितंबर में किया जाएगा।

अमेठी की कोरवा फैक्टरी में रूसी डिजाइन से शुरू हुआ सफर अब पूरी तरह भारतीय

रूस से हुआ तकनीकी हस्तांतरण : *परियोजना की शुरुआत में कोरवा में एके-203 का उत्पादन रूस से मिले तकनीकी हस्तांतरण के आधार पर हुआ था। शुरुआती राइफलों में स्वदेशी उपकरणों की हिस्सेदारी कम थी। अब राइफल का हर पुर्जा और इसमें इस्तेमाल होने वाला कच्चा माल भारतीय उद्योग से लिया जा रहा है। आईआरआरपीएल के अनुसार, स्वदेशी एके-203 का फायरिंग और बर्स्ट फायरिंग परीक्षण भी पूरा हो चुका है।*

2032 तक आपूर्ति, 2030 तक पूरा करने का लक्ष्य : आईआरआरपीएल को 6,01,427 राइफलों की आपूर्ति अक्टूबर 2032 तक करनी है। कंपनी उत्पादन बढ़ाकर इसे दिसंबर 2030 तक पूरा करने की योजना बना रही है। वर्ष 2026 से उत्पादन क्षमता बढ़ाकर करीब 12 हजार राइफल प्रतिमाह करने का लक्ष्य है। संयंत्र में क्षमता और बढ़ाकर हर 100 सेकंड में एक एके-203 तैयार करने की योजना है।

सीमाओं पर तैनात जवानों के लिए अहम हथियार : एके-203 को मजबूती, विश्वसनीयता और आसान संचालन को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। 7.62×39 मिलीमीटर की यह असॉल्ट राइफल उत्तरी और पश्चिमी सीमाओं के साथ आतंकवाद रोधी अभियानों में तैनात जवानों के लिए प्रमुख व्यक्तिगत हथियार के तौर पर इस्तेमाल की जाएगी।

सरकार ने 2021 में 7.62×39 मिलीमीटर क्षमता वाली एके-203 को इंसास के स्थान पर शामिल करने का फैसला किया था। रक्षा मंत्रालय और इंडो-रशियन राइफल्स प्राइवेट लिमिटेड (आईआरआरपीएल) के बीच 6,01,427 राइफलों की आपूर्ति का करीब 5,200 करोड़ रुपये का अनुबंध हुआ है।